समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

लोक कल्याण सेतु

मूल्य : ₹ ३.५०

• १५ अक्टूबर २०१२ • वर्ष : १६ • अंक : ४ (निरंतर अंक : १८४)

मासिक समाचार पत्र

दीपावली पर्व : ११ से १५ नवम्बर

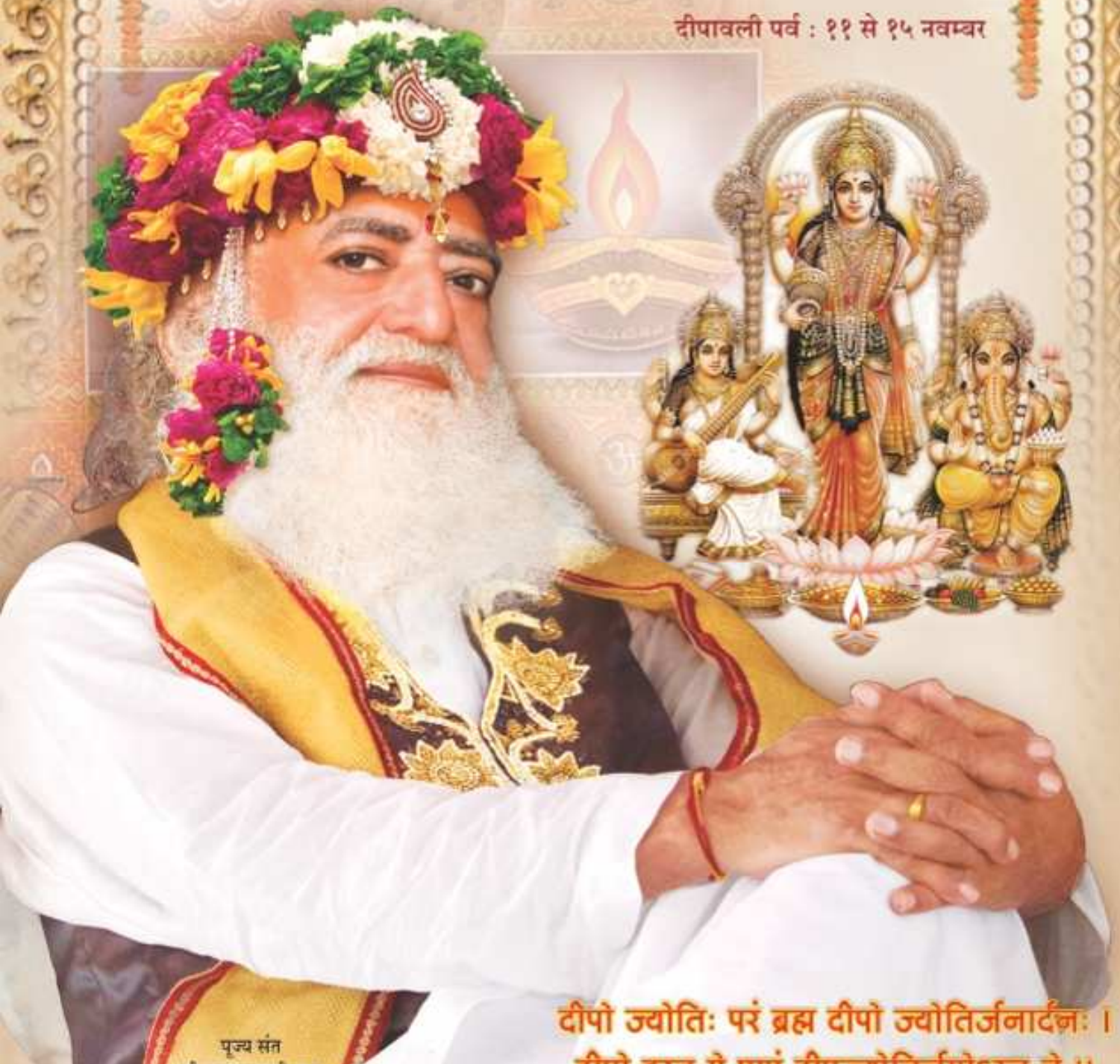

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

दीये अनेक, दीये जलानेवाले अनेक, दीयों की लौएँ अनेक लेकिन उनमें अग्निदेव एक-के-एक। दीपावली हमें यह संदेश देती है कि तुम्हारे-हमारे शरीर अनेक, तुम्हारे-हमारे चित्त अनेक, तुम्हारे-हमारे विचार अनेक लेकिन उनका द्रष्टा - ज्योतियों की ज्योति चैतन्य परमात्मा एक-का-एक। यदि आप उस एक में टिक जायें तो आपकी महा दिवाली हो जायेगी, परम दिवाली हो जायेगी।

गुरुनिष्ठा का महकता आदर्श

(ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस : १० नवम्बर)

पूजनीया मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी (अम्मा) गुरुभक्ति व गुरुनिष्ठा के महान इतिहास का एक प्रेरणादायी स्वर्णिम अध्याय थीं। पूज्य बापूजी में उनकी निष्ठा गजब की थी ! अपने पुत्र में गुरुबुद्धि करके संसार से तर जाना, ऐसा केवल दो ही महान नारियों के जीवन में देखा गया। एक तो कपिल मुनि की माता देवहूति और दूसरी हमारी प्यारी अम्मा, जिनके जीवन में गुरुनिष्ठा ही सर्व नियम-निष्ठा और गुरुभक्ति ही प्रभुभक्ति थी।

उनमें गुरु-आज्ञापालन का भाव अद्भुत था। पूज्यश्री कहते हैं : ''मेरी माँ में पार्वती (श्रद्धा) का स्वरूप तो था ही, साथ में शिव (विश्वास) का स्वरूप भी था। मैं एक बार जो कह देता, उनके लिए वह पत्थर पर लकीर हो जाता।''

एक बार अम्मा भुट्टा खा रही थीं। पूज्यश्री ने कहा : ''भुट्टा तो भारी होता है, बुढ़ापे में देर से पचता है। क्यों खाती हो ?'' अम्मा ने भुट्टा रख दिया। रख दिया तो ऐसा रख दिया कि शेष जीवन में मकई का एक दाना भी उन्होंने कभी मुँह में नहीं डाला। कैसा गजब का गुरुआज्ञा-पालन था अम्मा का !

एक बार कुम्भ मेले के अवसर पर पूज्य बापूजी हरिद्वार में रुके हुए थे। वहाँ उन्होंने अम्मा को भी कुछ दिनों के लिए बुलाया था।

अम्मा की शारीरिक स्थिति का ध्यान रखते हुए पूज्यश्री ने संदेश भिजवाया था कि 'अम्मा के स्वास्थ्य के लिए प्रातःभ्रमण करना हितकारी है।' परंतु अम्मा के लिए जहाँ निवास-व्यवस्था की गयी थी, वहाँ आसपास का रास्ता बहुत पथरीला था, जिससे अम्मा को सैर करने में अत्यंत कठिनाई होती थी। फिर भी संदेशा पाने के बाद अम्मा ने नियमित रूप से रोज सैर करना प्रारम्भ कर दिया। पूज्यश्री को जब इस बात का पता चला कि रास्ता पथरीला है तो उन्होंने एक सेवक को अम्मा के लिए जूते की व्यवस्था करने के लिए कहा। आज्ञानुसार सेवक जूते ले गया परंतु जूते

(शेष पृष्ठ .... पर)

भारतीय संस्कृति का अनुपम पर्व : दीपावली

(दीपावली पर्व : ११ से १५ नवम्बर)

'दीपावली' शब्द 'दीप' व 'अवली' शब्दों के संयोग से बना है, जिसका अर्थ होता है '.....

आपके जीवन को अमृतमय बनाने के लिए कतार में खड़ा सबसे पहला पर्व है 'धनतेरस', जो समुद्र-मंथन से उत्पन्न, हाथ में अमृतकलश लिये भगवान धन्वंतरिजी की जयंती के उपलक्ष्य में तथा यमदंड की निवृत्ति के निमित्त मनाया जाता है। इससे जुड़ा एक कारुणिक आख्यान है -

एक बार यमराज ने यमदूतों से पूछा : ''क्या प्राणियों के प्राण हरते समय तुम लोगों को दया नहीं आती ?''

यमदूत बोले : ''अकाल मृत्यु के समय दुःखी हृदयों को देखकर हमारा हृदय वेदना से भर जाता है।''

एक यमदूत बोला : ''राजा हेमराज के यहाँ पुत्र के जन्मते ही भविष्यवाणी हुई कि 'विवाह के चार दिन बाद इसकी मृत्यु हो जायेगी।' राजा ने कई उपाय किये परंतु होनी टल न सकी और नवविवाहित पुत्र की मृत्यु हो गयी। खुशी का माहौल रुदन में बदल गया। जब ऐसी घटना घटती है तब प्राणियों की वेदना देखकर हमें दया आ जाती है। अतः आप कोई ऐसा उपाय बतायें जिससे जीव अकाल मृत्यु से बच जायें।''

करुण वृत्तांत सुन यमराज बोले : .....

(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८४, अक्टूबर २०१२)

सावधानी ही साधना है

(रंग अवधूत महाराज जयंती पर विशेष)

गोधरा (गुजरात) में पांडुरंग नाम का एक बड़ा ही कुशाग्र और सुदृढ़ विद्यार्थी था, जो दूसरों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहता था। उसकी माता रुक्मिणी उसे 'बाबू' कहकर पुकारती थीं। वह बचपन से ही लौकिक पढ़ाई के साथ अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य परमात्मप्राप्ति के प्रति खूब जागरूक था।

वह प्रसन्नमुख, सूझबूझ का धनी और एक अच्छा नाटककार भी था। उसे संगीत का बड़ा शौक था। वह बाँसुरी बहुत सुंदर व सुरीली बजाता था, जिसे सुननेवाले मंत्रमुग्ध हो जाते और रोज सुनने की अभिलाषा रखते थे। वह रोज शाम को आधा घंटा बंसी बजाता और फिर घूमने जाता था।

एक दिन किसी बेचैनी के कारण उसने बंसी नहीं बजायी और सीधा घूमने निकल पड़ा। सामने टीले के ऊपर एक किशोरी बैठी थी। उसने पूछा : ''आज आपने बंसी क्यों नहीं बजायी ?''

पांडुरंग एकदम चौंक गया, उसने पूछा : ''तुमने मुझसे यह किस कारण पूछा ?''...

(शेष भाग पढने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८४, अक्टूबर २०१२)

सद्गुरु-सेवा ही सब कुछ

सद्गुरु-सेवा की महिमा बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

हे उद्धव ! वास्तव में जो सद्गुरु हैं वे मेरी ही मूर्ति हैं, यह तुम निश्चयपूर्वक ध्यान में रखो। इस विषय में संशय नहीं करना। इसीका नाम 'अनन्य भक्ति' है। एकाग्र होकर जो गुरु का भजन किया

जाता है, वही मेरी बड़ी पूजा है। गुरु और मैं कभी कल्पांत में भी पृथक् नहीं होते। 'गुरु और भगवान दोनों एक ही हैं।' - ऐसी भावना से जो भजन करता है वही गुरु का सेवक होता है। इसके सिवाय कोई दूसरा होगा तो इसमें संशय है। मुझसे एकत्व प्राप्त करने के लिए जिसने अत्यंत प्रेम से गुरुभक्ति स्वीकारी है वही त्रिलोकी में धन्य है।...

(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८४, अक्टूबर २०१२)

संत का एक वचन, बदले सारा जीवन

(गुरु नानकदेव जयंती : २८ नवम्बर)

एक बार गुरु नानकदेव यात्रा करते-करते लाहौर पहुँचे। हयात संत के पुण्यमय दर्शन-सान्निध्य का लाभ उठाने भक्त उमड़ने लगे। करोड़पति सेठ दुनीचंद भी दर्शन करने पहुँचा और बड़े आदर से उन्हें अपने घर ले आया।

घर पहुँचते ही सेठ के दरवाजे पर बँधी सैकड़ों झंडियों को देखकर नानकजी ने पूछा : ''अरे, तुमने ये झंडियाँ क्यों बाँध रखी हैं ?''...

(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८४, अक्टूबर २०१२)

बच्चों के जीवन में लगाओ चार चाँद

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रसाद से)

डॉ. जे. मार्गन और दूसरे डॉक्टर लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तान का ॐकार मंत्र बड़ा सफल है - पेट की तकलीफें छू, यकृत की तकलीफें छू, दिमाग की कमजोरी छू। वे तो केवल तीन के छू होने की बात बोलते हैं, मैं तो बोलता हूँ कि कोई ॐकार का ५० दिन का अनुष्ठान करे तो ७ जन्म की दरिद्रता छू और १ साल का अनुष्ठान करे तो परमात्मा का साक्षात्कार हो जाय। 'प्रणववाद' ग्रंथ में ॐकार मंत्र से संबंधित २२ हजार श्लोकों का समावेश है। तो आपको मैं ॐकार का जप करने की रीति बताता हूँ। आपको पापनाशिनी ऊर्जा मिलेगी, आपके हृदय में भगवान का रस आयेगा। अपने बच्चे-बच्चियों को सिखाओ, उन्हें इकट्ठा करके बोलो कि 'ॐ के जप से परीक्षा में अच्छे अंक आयेंगे, यादशक्ति बढ़ेगी तथा तुमको भगवान भी प्रेम करेंगे और लोग भी प्रेम करेंगे।'

क्या करोगे पता है ?...

(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८४, अक्टूबर २०१२)

जीवनोपयोगी तथ्य व उनके कारण

१. तथ्य : हास्य-प्रयोग करना चाहिए।

कारण : इससे नाड़ी-शोधन होता है, शरीर में स्फूर्ति आती है। दुःख, चिंता, तनाव व रोग दूर होते हैं। यह प्रयोग...

२. तथ्य : मंदिरों, पूजास्थलों में घंट बजाया जाता है।

कारण : इससे व्यक्ति के मन में...

३. तथ्य : प्रार्थना, हास्य-प्रयोग, कीर्तन, नृत्य आदि में प्रायः दोनों हाथ ऊपर करते हैं।

कारण : इससे जीवनशक्ति या ऊर्जा...

(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु अंक : १८४, अक्टूबर २०१२)

मसालों के औषधि-प्रयोग

सामान्यतः मसाले स्वादवर्धक व उत्तम पाचक के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं पर हमारे ऋषियों ने इन्हें औषधियों के रूप में भी प्रयुक्त करने की सुंदर रीति समाज को प्रदान की है। कुछ मसालों के औषधीय प्रयोग इस प्रकार हैं :

जीरा

यह त्रिदोषशामक, वायुनाशक, वेदनाहर तथा मातृदुग्धवर्धक है।

✲ समभाग जीरा व मिश्री पीसकर ५-६ ग्राम मिश्रण सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करने या २-३ ग्राम पिसे जीरे में गुड़ मिलाकर खाने से माँ का दूध बढ़ता है।

✲ समभाग जीरा व मिश्री पीसकर उसका २ से ५ ग्राम मिश्रण चावल के धोवन के साथ लेने से श्वेतप्रदर (ल्यूकोरिया) में लाभ होता है।

धनिया, सौंफ तथा अन्य घरेलू प्रयोगों की जानकारी के लिए

(पढ़ें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८४, अक्टूबर २०१२)

आश्रम संचालित विद्यार्थी-उत्थान के विविध सेवाकार्य

आहवा, जि. डांग (गुज.) में नोटबुक-वितरण तथा
मंगरूल, जि. जलगाँव (महा.) के गरीब विद्यार्थियों में वस्त्र-वितरण।

शाहपुरकंडी, जि. पठानकोट (पंजाब) के विद्यार्थियों में जूता वितरण तथा अमरावती (महा.) में चप्पल वितरण।

विविध सेवाकार्य

कुरवई, जि. विदिशा (म.प्र.) तथा जमशेदपुर (झारखंड) में गर्म भोजन के डिब्बों का वितरण।

ग्वालियर (म.प्र.) में टोपी-वितरण तथा साबरकांठा (गुज.) में शरबत-वितरण।

स्थानाभाव के कारण सभी झाँकियाँ नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक झाँकियाँ देखने हेतु आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org देखें।

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2012)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.

आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाकार्य

भुसावल (महा.) में संकीर्तन यात्रा व गुरैया, जि. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में भक्ति जागृति यात्रा।

मुंबई के आदिवासियों एवं सातारा (महा.) के गरीबों में भंडारा।

स्थानाभाव के कारण सभी झाँकियाँ नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक झाँकियाँ देखने हेतु आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org देखें।

घर-घर पहुँचाओ संत-दर्शन अभियान

घर में सुख-शांति व बरकत देनेवाला, पूज्य बापूजी के आकर्षक श्रीचित्रों से युक्त वर्ष २०१३ का कैलेंडर घर-घर पहुँचाने हेतु यह अभियान चलाया जा रहा है। जो समितियाँ, साधक व सेवाधारी स्वयं व अन्य लोगों को प्रेरित करके कैलेंडरों के ज्यादा-से-ज्यादा ऑर्डर लेंगे, उन्हें निम्न विवरण के अनुसार पूज्यश्री के स्पर्श किये हुए प्रसाद दिये जायेंगे।

3D श्रीचित्र
१००० कैलेंडर पर

5 दुर्लभ वीसोंडी का सेट एवं पूज्यश्री की वाटिका की तुलसी माला
३००० कैलेंडर पर

श्रीचित्रयुक्त मंदिर
१०,००० कैलेंडर पर

नगजड़ित लाइटिंग फोटो
१५,००० कैलेंडर पर

पूज्यश्री की पहनी हुई पगड़ी व दीवाल घड़ी
२१,००० कैलेंडर पर

५१,००० कैलेंडर पर : पूज्यश्री को व्यासपीठ पर माल्यार्पण करने का दुर्लभ मौका, उस क्षण की फोटो प्रिंट तथा पूज्यश्री की पहनी पगड़ी व दीवाल घड़ी।

इस अवसर का लाभ लेने हेतु अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम व समितियों से आज ही सम्पर्क करें।